वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 276

श्री सरस्वती विधान

–रचयित्री–

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष के अन्तर्गत पूज्य माताजी के
55वें क्षुल्लिका दीक्षा दिवस के अवसर पर प्रकाशित

–प्रकाशक–

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	चैत्र कृष्णा एकम्, वी.नि.2533	मूल्य
2200 प्रतियाँ	4 मार्च 2007	12/-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

अनादिकाल से इस संसार सागर में असंख्य प्राणी परिभ्रमण कर रहे हैं। उनको धर्ममार्ग में लगाने के उद्देश्य से समय-समय पर आचार्यों ने अनेक बड़े-बड़े ग्रंथों की रचना की है। इसे काल का दोष ही कहा जाएगा कि आज मानव इतना अधिक व्यस्त हो गया है कि उसके पास इन ग्रंथों को पढ़ने का समय नहीं है। जन-साधारण की इस व्यस्तता को देखते हुए पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने उन ग्रंथों को सरल भाषा में प्रस्तुत करके एक बहुत बड़ा कार्य किया है। उन्होंने बच्चों के लिए बाल विकास, युवाओं के लिए औपन्यासिक शैली में पुस्तकें लिखीं, महिलाओं के लिए नारी-आलोक आदि तथा विद्वानों के लिए अष्टसहस्री आदि ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद करके साहित्यजगत में नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

मुझे यह कहते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि जब से ''वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला'' की स्थापना पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुई है, तब से लेकर आज तक उस ग्रंथमाला के माध्यम से लाखों-लाख ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है और वर्तमान में भी हो रहा है।

''सरस्वती विधान'' नामक इस नूतन विधान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने सरस्वती पूजन के साथ उनके 108 मंत्रों के 108 अर्घ्यों की रचना की है तथा उनकी शिष्या आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने ''सरस्वती चालीसा'' की रचना करके इसे आबाल-गोपाल के लिए भी उपयोगी बना दिया है आप सभी इस विधान के माध्यम से अपने ज्ञान की वृद्धि करें, यही मंगलकामना है।

प्रस्तावना

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

जैनधर्म में मुख्यरूप से तीन रत्न माने गये हैं–देव-शास्त्र और गुरु। इन तीन रत्नों की उपासना-आराधना करने से तीन रत्नों की प्राप्ति होती है–सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र। अर्थात् सच्चे देव–तीर्थंकर भगवन्तों की पूजा-अर्चना करने से सम्यग्दर्शन मिलता है, जिनवाणी का स्वाध्याय करने से, शास्त्रों की विनय करने से सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा सच्चे गुरु की श्रद्धा, उनकी पूजा आदि करने से सम्यक्चारित्र प्राप्त होता है।

इनमें से सम्यग्ज्ञान नामक द्वितीय रत्न हमें अद्वितीय पद की प्राप्ति कराने में सहायक सिद्ध होता है। जैसा कि कहा भी गया है–ज्ञान समान न आन, जगत में दूजो कारण।

आज हम साक्षात् रूप में देखते हैं कि किसी व्यक्ति के पास अथाह धनसम्पत्ति, वैभव आदि सब कुछ है परन्तु विद्यारूपी धन नहीं है तो उसकी समस्त धनसम्पत्ति आदि व्यर्थ समझी जाती है इसके विपरीत यदि किसी के पास विद्याधन है और लौकिक धन नहीं भी है तो वह अपना जीवन भली प्रकार से संवार लेता है। लोक व्यवहार में भी यह सूक्ति अति प्रसिद्ध है–विद्या ददाति विनयं अर्थात् विद्या विनय को देती है।

विद्या के ज्ञान, बुद्धि, विवेक, मति आदि अनेक पर्यायवाची नाम हैं।

प्रस्तुत पुस्तक ''श्री सरस्वती विधान'' में सरस्वती माता की पूजा-अर्चना के माध्यम से उनसे श्रुतज्ञान प्राप्ति की ही कामना की गई है। विधान की रचयित्री गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, जिनकी मति अर्थात् बुद्धि ज्ञानमयी देखकर ही तो उनके दीक्षागुरु आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज ने उनको ''ज्ञानमती'' नाम प्रदान किया था। नाम के अनुरूप ही हर कार्य को मूर्तरूप प्रदान करती हुईं पूज्य माताजी ने अनेकानेक विधानों की शृँखला में इस नवीन कड़ी को जोड़कर बहुत ही समसामयिक कार्य किया है। आज प्रत्येक छात्र को यह अपेक्षा रहती है कि हम जो भी परीक्षा देने जाएँ उसमें

उत्तीर्णता प्राप्त करें, उनके लिए यह विधान बहुत उपयोगी है। परीक्षा से पूर्व यदि विद्यार्थी सरस्वती माता की स्तुति, उनके 108 मंत्रों को पढ़ ले तो उसकी सफलता में कोई संदेह नहीं रह जायेगा।

इस विधान को 108 दिन तक लगातार करने से इस भव में तो ज्ञान का क्षयोपशम बढ़ेगा ही, अगले किसी न किसी भव में निश्चितरूप से पूर्ण श्रुतज्ञान की प्राप्ति होगी।

विधान में सर्वप्रथम सरस्वती स्तोत्र को पढ़कर पुनः 108 कोठों में 108 अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य चढ़ाएँ तथा अन्त में जयमाला पढ़कर द्वादशांग के सार को समझने का प्रयास करें। पुस्तक में प्रकाशित ज्ञान पचीसी व्रत को प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य करना चाहिए। इसमें मात्र 25 व्रत हैं इसकी पूरी विधि एवं व्रतों की अलग-अलग जाप्य भी इसी पुस्तक में प्रकाशित हैं।

अन्त में पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित सरस्वती चालीसा है, इसको प्रतिदिन पढ़ने से ज्ञान की विशेषरूप से वृद्धि होती है। जैसा कि चालीसा के अंत में पूज्य माताजी ने स्वयं लिखा है-

यह श्रुत चालीसा जो भविजन, प्रतिदिन श्रद्धा से पढ़ लेंगे।
लौकिक आध्यात्मिक ज्ञान सभी, वे अपने मन में भर लेंगे।।

वास्तव में संसार में मात्र लौकिक ज्ञान ही महत्त्व नहीं रखता है अपितु थोड़ा बहुत आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात् शास्त्रज्ञान अवश्य होना चाहिए जो कि संसार से पार कराने में निमित्त कारण होता है।

इस प्रकार इस सरस्वती विधान में प्रकाशित पूजन, भजन, चालीसा, आरती आदि को पढ़कर अपने ज्ञान की वृद्धि करें, यही मंगलकामना है तथा विधान की रचयित्री पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी इसी प्रकार समय-समय पर संसारी प्राणियों को अपने ज्ञानामृत का पान कराती रहें, यही वीरप्रभू से विनम्र प्रार्थना है।

विधान की रचयित्री राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान : टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि : आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)
गृहस्थ का नाम : कु. मैना
माता-पिता : श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग : ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
क्षुल्लिका दीक्षा : चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में
आर्यिका दीक्षा : वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व : अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदाबिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण,मांगीतुंगी मेंनिर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा।

महोत्सव प्रेरणा : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रिय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं
2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।
3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।
4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर,वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, तेरहद्वीप जिनालय तथा नवग्रहशांति जिनमंदिर।
5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।
6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।
7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।
8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।
9. यात्रियों के ठहरने के लिए डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।
10. जम्बूद्वीप परिसर में सुमेरुपर्वत की प्रदक्षिणा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी, मिनी ट्रेन, झूलें आदि हैं।
11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिनभर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य तीर्थों के दर्शन हेतु कम से कम एक बार अवश्य पधारें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' की स्थापना सन् 1974 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी 19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली

परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।

10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

संरक्षक

1. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।

18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्ला, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा देवी ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।

47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।

76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।

श्री सरस्वती विधान

(सरस्वती स्तोत्र)

बारह अंगंगिज्जा, दंसणतिलया चरित्तवत्थहरा।
चोद्दसपुव्वाहरणा, ठावे दव्वाय सुयदेवी।।१।।

आचारशिरसं सूत्र-कृतवक्त्रां सुकंठिकाम्।
स्थानेन समवायांग-व्याख्याप्रज्ञप्तिदोर्लताम् ।।२।।

वाग्देवतां ज्ञातृकथो-पासकाध्ययनस्तनीम्।
अंतकृद्दशसन्नाभि-मनुत्तरदशांगतः ।।३।।

सुनितंबां सुजघनां, प्रश्नव्याकरणश्रुतात्।
विपाकसूत्रदृग्वाद-चरणां चरणांबराम् ।।४।।

सम्यक्त्वतिलकां पूर्व-चतुर्दशविभूषणाम्।
तावत्प्रकीर्णकोदीर्ण-चारुपत्रांकुरश्रियम्।।५।।

आप्तदृष्टप्रवाहौघ-द्रव्यभावाधिदेवताम् ।
परब्रह्मपथादृप्तां, स्यादुक्तिं भुक्तिमुक्तिदाम् ।।६।।

निर्मूलमोहतिमिरक्षपणैकदक्षं,
न्यक्षेण सर्वजगदुज्ज्वलनैकतानम् ।
सोषेस्व चिन्मयमहो जिनवाणि ! नूनं,
प्राचीमतो जयसि देवि ! तदल्पसूतिम् ।।७।।

आभवादपि दुरासदमेव,
श्रायसं सुखमनन्तमचिंत्यम् ।
जायतेऽद्य सुलभं खलु पुंसां,
त्वत्प्रसादत् इहांब ! नमस्ते।।८।।

चेतश्चमत्कारकरा जनानां,
महोदयाश्चाभ्युदयाः समस्ताः।
हस्ते कृताः शस्तजनैः प्रसादात्,
तवैव लोकांब ! नमोस्तु तुभ्यम् ।।९।।

सकलयुवतिसृष्टेरंब ! चूडामणिस्त्वं,
त्वमसि गुणसुपुष्टेर्धर्मसृष्टेश्च मूलम् ।
त्वमसि च जिनवाणि ! स्वेष्टमुक्त्यंगमुख्या,
तदिह तव पदाब्जं, भूरिभक्त्या नमामः।।१०।।

अथ सरस्वती पूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

सरस्वती स्तोत्र (हिन्दी)

शंभु छंद

श्रुतदेवी बारह अंगों से, निर्मित जिनवाणी मानी हैं।
सम्यग्दर्शन है तिलक किया, चारित्र वस्त्र परिधानी हैं।।
चौदह पूर्वों के आभरणों से, सुंदर सरस्वती माता।
इस विध से द्वादशांग कल्पित, जिनवाणी सरस्वती माता।।१।।

श्रुत 'आचारांग' कहा मस्तक, मुख 'सूत्रकृतांग' सरस्वति का।
ग्रीवा है 'स्थानांग' कहा, श्री जिनवाणी श्रुतदेवी का।।
'समवाय अंग' 'व्याख्या प्रज्ञप्ती', माँ की उभय भुजाएं हैं।
द्वय 'ज्ञातृकथांग' 'उपासकाध्ययनांग' स्तन कहलाये हैं।।२।।

नाभी है 'अंतकृद्दशांग' वर नितंब 'अनुत्तरदशांग' है।
वर 'प्रश्नव्याकरण अंग' मात का, जघनभाग कहते श्रुत हैं।।
पाद्द्वय 'विपाकसूत्रअंग' 'दृष्टिवादांग' कहें श्रुत में।
'सम्यक्त्व' तिलक हैं अलंकार, चौदह पूरब मानें सच में।।३।।

'चौदहों प्रकीर्णक' श्रुत वस्त्रों में, बने बेल-बूटे सुंदर।
ऐसी ये सरस्वती माता, जो द्वादशांगवाणी सुखकर।।
संपूर्ण पदार्थों के ज्ञाता, तीर्थंकर की जो दिव्यध्वनी।
सब द्रव्यों के पर्यायों की, 'श्रुतदेवी' अधिष्ठात्रि मानी।।४।।

जो परमब्रह्मपथ अवलोकन, इच्छुक हैं भव्यात्मा उनको।
स्याद्वाद रहस्य बता करके, भुक्ती मुक्ती देती सबको।।
चिन्मयज्योती मोहांधकार, हरिणी हे जिनवाणी माता।
रवि उदय पूर्वदिशी जेत्री, त्रिभुवन द्योतित करणी माता।।५।।

जो अनादि से दुर्लभ अचिन्त्य, आनन्त्य मोक्षसुख है जग में।
हे सरस्वती मातः! वह भी, तव प्रसाद से अतिसुलभ बने।।
आश्चर्यकारि स्वर्गादिक सब, ऐश्वर्य प्राप्त हों भक्तों को।
मेरे सब वाञ्छित पूर्ण करो, हे मातः! नमस्कार तुमको।।६।।

संपूर्ण स्त्री की सृष्टी में, चूड़ामणि हो हे सरस्वती!
तुम से ही दयाधर्म की औ, संपूर्ण गुणों की उत्पत्ती।।
मुक्ती के लिए प्रमुख कारण, माँ सरस्वती! मैं नमूँ तुम्हें।
तव चरण कमल में शीश धरूँ, भक्तीपूर्वक नित नमूँ तुम्हें।।७।।

अथ सरस्वती पूजा प्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री सरस्वती विधान

शंभु छंद

तीर्थंकर के मुख से खिरती, अनअक्षर दिव्यध्वनी भाषा।
बारह कोठों में सबके हित, परिणमती सर्वजगत् भाषा।।
गणधर गुरु जिन ध्वनि को सुनकर, बारह अंगों में रचते हैं।
हम दिव्यध्वनी का आह्वानन, करके भक्ती से यजते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीमातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीमातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीमातः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-भुजंगप्रयात छंद

मुनीचित्त सम नीर पावन लिया है।
सरस्वति चरण तीन धारा दिया है।।
जजूँ तीर्थकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै जलं.....।

तपे स्वर्णरस सम घिसा गंध लाया।
सरस्वति चरण चर्च कर सौख्य पाया।।
जजूँ तीर्थकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै चंदनं.....।

धुले श्वेत अक्षत अखंडित लिये हैं।
प्रभो[१] कीर्ति को पुंज अर्पण किये हैं।।

१. दिव्यध्वनि

जजूँ तीर्थकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै अक्षतं.....।

जुही मोगरा केतकी पुष्प लेके।
चढ़ाऊँ प्रभू की ध्वनी को रुची से।।
जजूँ तीर्थकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै पुष्पं.....।

मलाई पुआ खीर पूरी बनाके।
चढ़ाऊँ प्रभू कीर्ति को क्षुध विनाशे।।
जजूँ तीर्थकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै नैवेद्यं.....।

जले दीप ज्योती दशों दिक् प्रकाशे।
जजें नाथ ध्वनि को स्वपर ज्ञान भासे।।
जजूँ तीर्थकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै दीपं.....।

अगनिपात्र में धूप खेऊं सुगंधी।
सरस्वति कृपा से करूँ मोह बंदी।।
जजूँ तीर्थकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै धूपं.....।

अनंनास अंगूर केला फलों को।
चढ़ाऊँ महामोक्ष फल हेतु ध्वनि को।।

जजूँ तीर्थकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै फलं.....।

जलादी लिये स्वर्ण पुष्पों सहित मैं।
करूँ अर्घ अर्पण सरस्वति चरण में।।
जजूँ तीर्थकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं.....।

दोहा —

गंगा नदि को नीर ले, शारद माँ पद कंज।
त्रय धारा देते मिले, मुझे शांति सुखकंद।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।११।।

पुष्पांजलिः।

सरस्वती देवी के १०८ मंत्रों के १०८ अर्घ्य

अर्हद्वक्त्राब्जसंभूतां, गणाधीशावतारितां।
महर्षिधारितां स्तोष्ये, नाम्नामष्टशतेन गां।।१।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

१. ॐ ह्रीं श्री आदिब्रह्ममुखाम्भोज प्रभवायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
२. ॐ ह्रीं द्वादशांगिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
३. ॐ ह्रीं सर्वभाषायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४. ॐ ह्रीं वाण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५. ॐ ह्रीं शारदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

६. ॐ ह्रीं गिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७. ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८. ॐ ह्रीं ब्राह्म्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९. ॐ ह्रीं वाग्देवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१०. ॐ ह्रीं देव्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
११. ॐ ह्रीं भारत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१२. ॐ ह्रीं श्रीनिवासिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१३. ॐ ह्रीं आचारसूत्रकृतपादायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१४. ॐ ह्रीं स्थानसमवायांगजंघायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१५. ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्ति-ज्ञातृ-धर्मकथांग चारूरूभासुरायै नमः अर्घ्यं....।
१६. ॐ ह्रीं उपासकांगसन्मध्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१७. ॐ ह्रीं अंतकृद्दशांगनाभिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१८. ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपत्तिदशप्रश्नव्याकरणस्तन्यै नमः अर्घ्यं.....।
१९. ॐ ह्रीं विपाकसूत्रसद्वक्षसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
२०. ॐ ह्रीं दृष्टिवादांगकंधरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
२१. ॐ ह्रीं परिकर्ममहासूत्रविपुलांसविराजितायै नमः अर्घ्यं....।
२२. ॐ ह्रीं चन्द्रमार्तंडप्रज्ञप्तिभास्वद्बाहुसुबल्ल्यै नमः अर्घ्यं....।
२३. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसागरप्रज्ञप्तिसत्करायै नमः अर्घ्यं....।
२४. ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिविभ्राजत्पंचशाखामनोहरायै नमः अर्घ्यं....।
२५. ॐ ह्रीं पूर्वानुयोगवदनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
२६. ॐ ह्रीं पूर्वाख्यचिबुकांचितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
२७. ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसन्नासायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
२८. ॐ ह्रीं अग्रायणीयदंतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
२९. ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवाद-अस्तिनास्तिप्रवादोष्ठायै नमः अर्घ्यं.....।
३०. ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादकपोलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
३१. ॐ ह्रीं सत्यप्रवादरसनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

३२. ॐ ह्रीं आत्मप्रवादमहाहनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
३३. ॐ ह्रीं कर्मप्रवादसत्तालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
३४. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानललाटायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
३५. ॐ ह्रीं विद्यानुवाद-कल्याणनामधेयसुलोचनायै नमःअर्घ्यं.....।
३६. ॐ ह्रीं प्राणावाय-क्रियाविशालपूर्वभ्रूधनुर्लतायै नमःअर्घ्यं.....।
३७. ॐ ह्रीं लोकबिन्दुमहासारचूलिकाश्रवणद्वयायै नमःअर्घ्यं....।
३८. ॐ ह्रीं स्थलगाख्यलसच्छीर्षायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
३९. ॐ ह्रीं जलगाख्यमहाकचायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४०. ॐ ह्रीं मायागतसुलावण्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४१. ॐ ह्रीं रूपगाख्यसुरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४२. ॐ ह्रीं आकाशगतसौंदर्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४३. ॐ ह्रीं श्रीकलापिसुवाहनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४४. ॐ ह्रीं निश्चयव्यवहारदृङ्नूपुरायै नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४५. ॐ ह्रीं बोधमेखलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४६. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रशीलहारायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४७. ॐ ह्रीं महोज्ज्वलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४८. ॐ ह्रीं नैगमामोघकेयूरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
४९. ॐ ह्रीं संग्रहानघचोलकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५०. ॐ ह्रीं व्यवहारोद्घकटकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५१. ॐ ह्रीं ऋजुसूत्रसुकंकणायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५२. ॐ ह्रीं शब्दोज्ज्वलमहापाशायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५३. ॐ ह्रीं समभिरूढमहांकुशायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५४. ॐ ह्रीं एवंभूतसन्मुद्रायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५५. ॐ ह्रीं दशधर्ममहाम्बरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५६. ॐ ह्रीं जपमालाल-सद्हस्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५७. ॐ ह्रीं पुस्तकांकितसत्करायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

५८. ॐ ह्रीं नयप्रमाणताटंकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
५९. ॐ ह्रीं प्रमाणद्वयकर्णिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
६०. ॐ ह्रीं केवलज्ञानमुकुटायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
६१. ॐ ह्रीं शुक्लध्यानविशेषकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
६२. ॐ ह्रीं स्यात्कारप्राणजीवन्त्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
६३. ॐ ह्रीं चिदुपादेयभाषिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
६४. ॐ ह्रीं अनेकांतात्मकानंदपद्मासननिवासिन्यै नमःअर्घ्यं.....।
६५. ॐ ह्रीं सप्तभंगीसितच्छत्रायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
६६. ॐ ह्रीं नयषट्कप्रदीपिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
६७. ॐ ह्रीं द्रव्यार्थिकनयानूनपर्यायार्थिकचामरायै नमः अर्घ्यं....।
६८. ॐ ह्रीं कैवल्यकामिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
६९. ॐ ह्रीं ज्योतिर्मय्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७०. ॐ ह्रीं वाङ्मयरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७१. ॐ ह्रीं पूर्वापराविरुद्धायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७२. ॐ ह्रीं गवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७३. ॐ ह्रीं श्रुत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७४. ॐ ह्रीं देवाधिदेवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७५. ॐ ह्रीं त्रिलोकमंगलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७६. ॐ ह्रीं भव्यशरण्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७७. ॐ ह्रीं सर्ववंदितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७८. ॐ ह्रीं बोधमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
७९. ॐ ह्रीं शब्दमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८०. ॐ ह्रीं चिदानन्दैकरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८१. ॐ ह्रीं शारदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८२. ॐ ह्रीं वरदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८३. ॐ ह्रीं नित्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

८४. ॐ ह्रीं भुक्तिमुक्तिफलप्रदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८५. ॐ ह्रीं वागीश्वर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८६. ॐ ह्रीं विश्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८७. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८८. ॐ ह्रीं शुभंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
८९. ॐ ह्रीं हितंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९०. ॐ ह्रीं श्रीकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९१. ॐ ह्रीं शंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९२. ॐ ह्रीं सत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९३. ॐ ह्रीं सर्वपापक्षयंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९४. ॐ ह्रीं शिवंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९५. ॐ ह्रीं महेश्वर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९६. ॐ ह्रीं विद्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९७. ॐ ह्रीं दिव्यध्वन्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९८. ॐ ह्रीं मात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
९९. ॐ ह्रीं विद्वदाल्हाददायिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१००. ॐ ह्रीं कलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१०१. ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१०२. ॐ ह्रीं दीप्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१०३. ॐ ह्रीं सर्वशोकप्रणाशिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१०४. ॐ ह्रीं महर्षिधारिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१०५. ॐ ह्रीं पूतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१०६. ॐ ह्रीं गणाधीशावतारितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१०७. ॐ ह्रीं ब्रह्मलोकस्थिरावासायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
१०८. ॐ ह्रीं द्वादशाम्नाय देवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पूर्णार्घ्य – शंभु छन्द

श्रुतज्ञान सकल यह द्वादशांग-मय जिनवर ध्वनि से प्रगट सांच।
इक सौ बारह करोड़ तेरासी, लाख अठावन सहस पांच।।
इन द्वादशांग अरु अंगबाह्य को, नित प्रति वंदन करता हूँ।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ा करके, श्रुतज्ञान ज्योति को धरता हूँ।।१०९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गत द्वादशांगमयी सरस्वतीदेव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः।

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावल से १०८ बार मंत्र को जपें।)

जयमाला

शंभु छंद

जय जय तीर्थंकर धर्म चक्रधर, जय प्रभु समवसरण स्वामी।
जय जय त्रिभुवन त्रयकाल एक, क्षण में जानो अंतर्यामी।।
जय सब विद्या के ईश आप की, दिव्यध्वनी जो खिरती है।
वह तालु-ओष्ठ-कंठादिक के, व्यापार रहित ही दिखती है।।१।।

अठरह महाभाषा सातशतक, क्षुद्रक भाषामय दिव्य धुनी।
उस अक्षर अनक्षरात्मक को, संज्ञी जीवों ने आन सुनी।।
तीनों संध्या कालों में वह, त्रय त्रय मुहूर्त स्वयमेव खिरे।
गणधर-चक्री अरु इंद्रों के, प्रश्नों वश अन्य समय भि खिरे।।२।।

भव्यों के कर्णों में अमृत, बरसाती शिव सुखदानी है।
चैतन्य सुधारस की झरणी, दुखहरणी यह जिनवाणी है।।
जन चार कोश तक इसे सुनें, निजनिज के सब कर्तव्य गुनें।
नित ही अनंत गुण श्रेणिरूप, परिणाम शुद्ध कर कर्म हनें।।३।।

छह द्रव्य पांच हैं अस्तिकाय, अरु तत्त्व सात नवपदार्थ भी।
इनको कहती ये दिव्यध्वनी, सबजन हितकर शिवमार्ग सभी।।
आनन्त्य अर्थ के ज्ञान हेतु, जो बीज पदों का कथन करे।
अतएव अर्थकर्ता जिनवर, उनकी ध्वनि मेघ समान खिरे।।४।।

उन बीजपदों में लीन अर्थ, प्रतिपादक बारह अंगों को।
गणधर गुरु गूंथे अतएव ग्रन्थ-कर्ता मानें वंदूं उनको।।
जिन श्रुत ही महातीर्थ उत्तम, उसके कर्ता तीर्थंकर हैं।
ये सार्थक नाम धरें जग में, इससे तिरते भवसागर हैं।।५।।

जय जय प्रभुवाणी कल्याणी, गंगाजल से भी शीतल है।
जय जय शमगर्भित अमृतमय, हिमकण से भी अति शीतल है।।
चंदन अरु मोतीहार चंद्र-किरणों से भी शीतलदायी।
स्याद्वादमयी प्रभु दिव्यध्वनी, मुनिगण को अतिशय सुखदायी।।६।।

वस्तू में धर्म अनंत कहे, उन एक एक धर्मों को जो।
यह सप्तभंगि अद्भुत कथनी, कहती है सात तरह से जो।।
प्रत्येक वस्तु में विधि निषेध, दो धर्म प्रधान गौण मुख से।
वे सात तरह से हों वर्णित, नहिं भेद अधिक अब हो सकते।।७।।

प्रत्येक वस्तु है अस्तिरूप, अरु नास्तिरूप भी है वो ही।
वो ही है उभयरूप समझो, फिर अवक्तव्य भी है वो ही।।
वो अस्तिरूप अरु अवक्तव्य, फिर नास्ति अवक्तव्य भंग धरे।
फिर अस्तिनास्ति अरु अवक्तव्य, ये सात भंग हैं खरे खरे।।८।।

इस सप्तभंगमय सिंधू में जो, नित अवगाहन करते हैं।
वे मोह-राग-द्वेषादिरूप, सब कर्मकालिमा हरते हैं।।
वे अनेकांतमय वाक्यसुधा, पीकर आतमरस चखते हैं।
फिर परमानंद परमज्ञानी, होकर शाश्वत सुख भजते हैं।।९।।

मैं निज अस्तित्व लिये हूँ नित, मेरा पर में अस्तित्व नहीं।
मैं चिच्चैतन्य स्वरूपी हूँ, पुद्गल से मुझ नास्तित्व सही।।
इस विध निज को निज के द्वारा, निज में ही पाकर रम जाऊँ।
निश्चयनय से सब भेद मिटा, सब कुछ व्यवहार हटा पाऊँ।।१०।।

भगवन्! कब ऐसी शक्ति मिले, श्रुत दृग् से निज को अवलोकूँ।
फिर स्वसंवेद्य निज आतम को, निज अनुभव द्वारा मैं खोजूँ।।

संकल्प विकल्प सभी तज के, बस निर्विकल्प मैं बन जाऊँ।
फिर केवल 'ज्ञानमती' से ही, निज को अवलोकूं सुख पाऊँ।।११।।

दोहा — **सब भाषामय दिव्यध्वनि, वाङ्मय गंगातीर्थ।**
इसमें अवगाहन करूँ, बन जाऊँ जग तीर्थ।।१२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयीसरस्वतीदेव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

इदमष्टोत्तरशतं, भारत्याः प्रतिवासरं।
यः प्रकीर्तयते भक्त्या, स वै वेदांतगो भवेत् ।।१।।

कवित्वं गमकत्वं च , वादितां वाग्मितामपि।
समाप्नुयादिदं स्तोत्र-मधीयानो निरंतरं।।२।।

आयुष्यं च यशस्यं च, स्तोत्रमेतदनुस्मरन्।
श्रुतकेवलितां लब्ध्वा, सूरिर्ब्रह्म भजेत्परं।।४।।

इत्याशीर्वादः। पुष्पाञ्जलिः

सरस्वती स्तोत्र

चन्द्रार्क-कोटिघटितोज्ज्वल-दिव्य-मूर्ते!
श्रीचन्द्रिका-कलित-निर्मल-शुभ्रवस्त्रे!
कामार्थ-दायि-कलहंस-समाधिरूढे ।
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ! ।।१।।

देवा-सुरेन्द्र-नतमौलिमणि-प्ररोचि,
श्रीमंजरी-निविड-रंजित-पादपद्मे !
नीलालके ! प्रमदहस्ति-समानयाने!
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ! ।।२।।

केयूरहार-मणिकुण्डल-मुद्रिकाद्यैः,
सर्वाङ्गभूषण-नरेन्द्र-मुनीन्द्र-वंद्ये !
नानासुरत्न-वर-निर्मल-मौलियुक्ते !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ! ।।३।।

मंजीरकोत्कनककंकणाकिंकणीनां,
कांच्याश्च झंकृत-रवेण विराजमाने !
सद्धर्म-वारिनिधि-संतति-वर्द्धमाने !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।। ४।।

कंकेलिपल्लव-विनिंदित-पाणियुग्मे !
पद्मासने दिवस-पद्मसमान-वक्त्रे !
जैनेन्द्र-वक्त्र-भवदिव्य-समस्त-भाषे !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।। ५।।

अर्द्धेन्दुमण्डितजटाललितस्वरूपे !
शास्त्र-प्रकाशिनि-समस्त-कलाधिनाथे!
चिन्मुद्रिका-जपसराभय-पुस्तकांङ्के !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि!।।६।।

डिंडीरपिंड-हिमशंखासिता-भ्रहारे!
पूर्णेन्दु-बिम्बरुचि-शोभित-दिव्यगात्रे!
चांचल्यमान-मृगशावललाट-नेत्रे !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।।७।।

पूज्ये पवित्रकरणोन्नत-कामरूपे!
नित्यं फणीन्द्र-गरुडाधिप-किन्नरेन्द्रैः!
विद्याधरेन्द्र-सुरयक्ष-समस्त-वृन्दैः,
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि !।।८।।

सरस्वत्याः प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चल-भावेन , पूजनीया सरस्वती।।९।।

श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी।
अज्ञानतिमिरं हन्ति, विद्या-बहुविकासिनी।।१०।।

सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमललोचना।
हंसस्कन्ध-समारूढा, वीणा-पुस्तक-धारिणी।।११।।

प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदादेवी, चतुर्थं हंसगामिनी।।१२।।

पंचमं विदुषां माता, षष्ठं वागीश्वरी तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्ता, अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।१३।।

नवमं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मिणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत् ।।१४।।

वाणी त्रयोदशं नाम, भाषा चैव चतुर्दशं।
पंचदशं श्रुतदेवी च , षोडशं गौर्निगद्यते।।१५।।

एतानि श्रुतनामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
तस्य संतुष्यति माता, शारदा वरदा भवेत् ।। १६।।

सरस्वती ! नमस्तुभ्यं, वरदे ! कामरूपिणि!
विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा।।१७।।

।। इति श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम् ।।

प्रशस्ति

महावीर प्रभू की जन्मभूमि, कुण्डलपुर को शत शत वन्दन।
श्रीऋषभदेव से पार्श्वनाथ तक, जन्मभूमि को भी प्रणमन।।
श्री सरस्वती माँ के प्रसाद से, मुझको किंचित् ज्ञान मिला।
श्री 'सरस्वती पूजन विधान', रचने का पुण्य प्रभात खिला।।१।।

पच्चिस सौ तीस वीर संवत, शुक्ला कार्तिक पूनम तिथि में।
इस विधान को पूरण करके, मैं अतिशय हर्षित हूँ मन में।।
बीसवीं सदी के श्रेष्ठ प्रथम, आचार्य शांतिसागर माने।
इन पट्टाधीश प्रथम गुरुवर, आचार्य वीरसागर माने।।२।।

इन शिष्या गणिनी ज्ञानमती, मैंने अतिशायि विधान रचे।
जिनवर भक्ती परिणाम शुद्धि, हेतू बस कई सुग्रन्थ रचे।।
माँ सरस्वती की भक्ती ही, मुझ ज्ञानवृद्धि में कारण है।
गुरुओं की भक्ती भवतरणी, चारित्रशुद्धि का साधन है।।३।।

यह सरस्वती विधान करके, भक्तों! निज ज्ञान शुद्ध कर लो।
वर समीचीन ज्ञान बल से, निज मानव जन्म सफल कर लो।।
जब तक तीर्थंकर जन्मभूमि, तीरथ जग में कीर्ती पावें।
तब तक विधान यह इस जग में, जन करें करावें सुख पावें।।४।।

दोहा — सब भाषामय शारदे! मुझको दो वरदान।
सम्यग्ज्ञानमती सहित, पाऊँ केवलज्ञान ।। ५।।

ज्ञान पचीसी व्रत विधि

ज्ञान पचीसी व्रत[१] में ग्यारस के ग्यारह उपवास और चौदश के चौदह उपवास ऐसे पच्चीस उपवास होते हैं। यह व्रत ग्यारह अंग और चौदह पूर्व ज्ञान की आराधना के लिए किया जाता है। इसको श्रावण सुदी चतुर्दशी से करने का विधान है।

मतांतर से इस व्रत में दशमी के दश उपवास और पूर्णिमा के पंद्रह उपवास करने का भी विधान है।

इस व्रत में प्रधानरूप से श्रुतस्कंध यंत्र का अभिषेक एवं श्रुतज्ञान (सरस्वती) की पूजा करना चाहिए।

प्रत्येक व्रत की उत्तम विधि तो उपवास ही है। मध्यम एवं जघन्य विधि में शक्ति के अनुसार एकाशन या अल्पाहार करके भी व्रत किया जा सकता है। व्रत के दिन जिनेन्द्रदेव एवं श्रुतस्कंध यंत्र अथवा सरस्वती की मूर्ति का पंचामृत अभिषेक करके पूजा करें, पुनः सरस्वती के १०८ नामों को पढ़ते हुए एक-एक मंत्रों का उच्चारण कर सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावलों को चढ़ावें। अनंतर समुच्चय मंत्र से एक जाप्य करें।

समुच्चय जाप्य— ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगाय नमः।

ग्यारह अंग और चौदह पूर्व संबंधी व्रतों में पृथक्-पृथक् जाप्य भी करना चाहिए।

ग्यारह अंग की ११ जाप्य —

१ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-आचारांगाय नमः
२ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-सूत्रकृतांगाय नमः
३ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-स्थानांगाय नमः
४ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-समवायांगाय नमः
५ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-व्याख्याप्रज्ञप्ति अंगाय नमः
६ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-नाथधर्मकथांगाय नमः

१. "व्रततिथिनिर्णय" पृ. २१४।

७ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-उपासकाध्ययनांगाय नमः
८ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अंतकृत्दशांगाय नमः
९ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अनुत्तरोपपादिकदशांगाय नमः
१० —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्रश्नव्याकरणांगाय नमः
११ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-विपाकसूत्रांगाय नमः

चौदह पूर्वों की १४ जाप्य —

१ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-उत्पादपूर्वाय नमः
२ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अग्रायणीयपूर्वाय नमः
३ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-वीर्यानुप्रवादपूर्वाय नमः
४ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय नमः
५ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-ज्ञानप्रवादपूर्वाय नमः
६ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-सत्यप्रवादपूर्वाय नमः
७ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-आत्मप्रवादपूर्वाय नमः
८ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-कर्मप्रवादपूर्वाय नमः
९ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्रत्याख्यानपूर्वाय नमः
१० —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-विद्यानुप्रवादपूर्वाय नमः
११ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-कल्याणप्रवादपूर्वाय नमः
१२ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्राणावायप्रवादपूर्वाय नमः
१३ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-क्रियाविशालपूर्वाय नमः
१४ —ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-लोकबिंदुसारपूर्वाय नमः

इस व्रत के २५ उपवास एक वर्ष में करें। ऐसे एक वर्ष तक या बारह[१] वर्ष तक भी यह व्रत किया जाता है। व्रत पूर्ण करके यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

इस व्रत के प्रसाद से मनुष्य श्रुतज्ञान को प्राप्त कर अगले भव में श्रुतकेवली होकर परम्परा से केवलज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ हो जावेगा।

१. व्रत तिथि निर्णय, पृ. २१६।

सरस्वती माता की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

आरति करो रे,
जिनवाणी माता सरस्वती की, आरति करो रे।
द्वादशांगमय श्रुतदेवी का, श्रेष्ठ तिलक सम्यग्दर्शन।
वस्त्र धारतीं चारित के, चौदह पूरब के आभूषण।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
आकार सहित उन श्रुतदेवी की, आरति करो रे।।१।।

इनके आराधन से ज्ञानावरण कर्म क्षय होता है।
मति श्रुत ज्ञान प्राप्त होकर, अज्ञान स्वयं व्यय होता है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
तीर्थंकर प्रभु की दिव्यध्वनि की, आरति करो रे।।२।।

मनपर्ययज्ञानी गणधर भी, श्रुत आराधन करते हैं।
तभी घातिया कर्म नाशकर, केवलज्ञानी बनते हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
कैवल्यमयी शीतलवाणी की, आरति करो रे।।३।।

मुनि के अंग पूर्व की महिमा, तो आगम में मिलती है।
सम्यग्दृष्टि आर्यिका ग्यारह, अंगों को पढ़ सकती हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
सौंदर्यवती माँ सरस्वती की, आरति करो रे।।४।।

शुभ्र वस्त्र धारणी हंस-वाहिनी सरस्वती माता हैं।
शुभ्र ज्ञानकिरणों से युत, ''चंदना'' यही श्रुतमाता हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्रुतज्ञान समन्वित सरस्वती की, आरति करो रे।।५।।

सरस्वती-चालीसा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

दोहा

तीर्थंकर मुख से खिरी, नमूँ दिव्यध्वनि सार।
द्वादशांगमय सरस्वती, को वन्दन शत बार।।१।।

बुद्धि प्रखरता के लिए, करूँ मात गुणगान।
जड़ता मेरी दूर हो, पाऊँ ऐसा ज्ञान।।२।।

चालीसा माध्यम बने, गुण वर्णन में सार्थ।
हों प्रसन्न माँ सरस्वती, मुझ मन में साकार ।।३।।

चौपाई

जय माँ सरस्वती जिनवाणी, जय वागीश्वरि जय कल्याणी।।१।।
शारद मात तुम्हारी जय हो, तुम जिनवर मन में अक्षय हो।।२।।
द्वादशांगमय रूप तुम्हारा, ज्ञानीजन को लगता प्यारा।।३।।
वह आध्यात्मिक ज्ञान अपूरब, ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब।।४।।
आचारांग प्रथम कहलाता, सूत्रकृतांग द्वितीय सुहाता।।५।।
तीजा स्थानांग कहा है, समवायांग चतुर्थ रहा है।।६।।
व्याख्याप्रज्ञप्ती है पंचम, ज्ञातृकथा शुभ अंग है षष्ठम् ।।७।।
उपासकाध्ययनांग है सप्तम, अन्तःकृद्दश अंग जु अष्टम् ।।८।।
नवम अनुत्तरदशांग आता, दशम प्रश्नव्याकरण कहाता।।९।।
सूत्रविपाक नाम ग्यारहवाँ, दृष्टीवाद कहा बारहवाँ।।१०।।
दृष्टिवाद के पाँच भेद हैं, जिन्हें बताते जैन वेद हैं।।११।।
पहला है परिकर्म सुहाना, सूत्र पूर्वगत क्रमशः माना।।१२।।
है प्रथमानुयोग फिर चौथा, पंचम भेद चूलिका होता।।१३।।
चौदह भेद पूर्वगत के हैं, आगम में सार्थक वर्णे हैं।।१४।।

प्रथम कहा उत्पादपूर्व है, दूजा अग्रायणी पूर्व है।।१५।।
वीर्यप्रवाद पूर्व है तीजा, अस्तीनास्ति प्रवाद है चौथा।।१६।।
ज्ञानप्रवाद पूर्व है पंचम, सत्यप्रवाद पूर्व है षष्ठम् ।।१७।।
सप्तम पूर्व है आत्मप्रवादम्, कर्मप्रवाद पूर्व है अष्टम् ।।१८।।
नवमा प्रत्याख्यान पूर्व है, पुनि विद्यानुप्रवाद पूर्व है।।१९।।
पूर्व कहा कल्याणवाद है, प्राणावाय पूर्व द्वादश है।।२०।।
क्रियाविशाल पूर्व तेरहवाँ, लोकबिन्दुसारम् चौदहवाँ।।२१।।
ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब, इनसे युत जिनवचन अपूरब।।२२।।
वीरप्रभू की दिव्यध्वनि है, गौतम गणधर की कथनी से।।२३।।
यह श्रुत प्रगट हुआ धरती पर, आचार्यों की बना धरोहर ।।२४।।
परम्पराचार्यों ने पाया, भव्यों को उपदेश सुनाया।।२५।।
वर्तमान के इस कलियुग में, अंगपूर्व उपलब्ध न जग में।।२६।।
उनके अंशरूप हैं आगम, वर्तमान के श्रुत परमागम।।२७।।
षट्खण्डागम आदि ग्रंथ हैं, धवलादिक टीका से युत हैं।।२८।।
उस पर नूतन संस्कृत टीका , गणिनी ज्ञानमती जी ने लिखा।।२९।।
वर्तमान में चतुरनुयोगा, उसमें ही श्रुत गर्भित होगा।।३०।।
जो भी सब उपलब्ध शास्त्र हैं, उनसे कर लो सिद्ध स्वार्थ है।।३१।।
सरस्वती माँ का आराधन, करता है पापों का क्षालन।।३२।।
जिनवाणी के कई नाम हैं, सरस्वती भारती धाम है।।३३।।
शारद माँ तुम हंसवाहिनी, विदुषी वागीश्वरी ब्राह्मणी।।३४।।
ब्रह्मचारिणी और कुमारी, कहें जगन्माता सुखकारी।।३५।।
श्रुतदेवी भाषा गौ वाणी, विदुषी सर्वमता प्रभु वाणी।३६।।
इन सोलह नामों युत माता, मेरे मन की हरो असाता।।३७।।
अनेकान्तमय अमृत झरिणी, श्रुतज्ञान की तुम निर्झरिणी।।३८।।
तुममें हो अवगाहन मेरा, हो जावे बस ज्ञान उजेरा।।३९।।
यही एक अभिलाषा मेरी, मिटे ज्ञान से भव की फेरी।।४०।।

शंभु छंद

यह श्रुत चालीसा जो भविजन, प्रतिदिन श्रद्धा से पढ़ लेंगे।
लौकिक आध्यात्मिक ज्ञान सभी, वे अपने मन में भर लेंगे।।
पच्चिस सौ चौबिस वीर संवत् की, श्रुत पंचमी तिथी आई।
''चन्दनामती'' निज भावों में, श्रुतभक्ती गंगा भर लाई।।१।।

यह ज्ञानगंग बन करके मेरे, मन को पावन कर देवे।
जग को अपनी पावनता की, सौरभता का परिचय देवे।।
निज पर की जड़ता क्षय करने का, भाव मात्र इस रचना में।
जिनदेव शास्त्र गुरु की छाया, मेरे जीवन में सदा मिले।।२।।

दोहा

सरस्वती माँ के चरण, में अर्पित यह पुष्प।
चालीसा के निमित्त से, करूँ भाव निज शुद्ध।।३।।

विधान की रचयित्री गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।.......

पूजन करो जी,
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

Dé kéâ —**ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।**
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।

मुझ अज्ञानी ने माँ जब से, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।२।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।३।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।४।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।५।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।६।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।७।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्टद्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।९।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेरछंद

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा.....।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....।।

जयमाला

दोहा

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन–नागिन–मेरा मन डोले.....।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।। माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।१।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।। माता....।।

गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।२।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने, ज्ञान की ज्योति जलाई।। माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।३।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता....।।
ज्ञानज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।४।।

तीर्थ अयोध्या, मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।५।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।। माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।६।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।। माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।७।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।। माता....।।

साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।८।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।। माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।९।।

दोहा

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमति मात।।१०।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभुछंद

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें सदा पूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह,आलोक जगत को मिले सदा।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः